-: [illegible] :-

१) [illegible]

२) [illegible]

३) [illegible]

४) [illegible]

५) [illegible]

६) [illegible]

७) [illegible]

८) [illegible]
१) [illegible]

९) [illegible]

१०) [illegible]

११) [illegible]

१२) [illegible]

१३) [illegible]

१४) [illegible]

१५) [illegible]

(१) भारतीय नारी :-

चंद्रकलाने रजनीकांतसे विवाह कर बैठी है। अपना पती भी वह अब रजनीकांतको मानती है। उसके नामसे वह अब सुहागन बन बैठी है। भारतीय नारी जिसे एक बार पती मानती है। उसीको पती मानती है। पतीके हाथसे एकबार सिंदूर भर देनेपर वही पती उसका हो जाता है। अस्पतालमें चंद्रकलाने सिंदूर भरकर उसको सुहागन बना रखा है। यह भारतीय संस्कृतीका परिणाम है।

"मेरा विवाह हो चुका है।" १

लेकिन क्यों मेरा सिंदूर देखकर?

उन्हीके हाथसे लगा है।" २

"मैं अपना साथ सिंदूर लेती गई थी। उनके हाथपर सिंदूर रखकर मैंने लगा लिया। देखते नहीं हो कैसे सिंदूरकी होली खेली गई है?"

मुरारीलाल चंद्रकलासे कहते हैं कि, अब चंद्रकलाने रजनीकांतसे सुरक्षके बाद कहीं भी नहीं जाना चाहिये। तब चंद्रकला का मन यहाँ रहनेके लिये तैयार नहीं है। क्योंकि पतिका घर अब उसके लिये स्वर्ग था। जब पती ही नहीं रहा तो वह पिताके घर नहीं रहेगी। क्योंकि भारतीय स्त्रीका सच्चा स्थान पतीके घरमें है। पिताके नहीं। चंद्रकला पाश्चात्यकी है। पतीके घरमेंही उसका स्वर्ग मानती है।

"नहीं यहाँ रहनेपर मैं आपके लिये, आपकी मर्यादाके लिये कलंक रहूँगी।

और यहाँसे हट जानेपर — — और फिर पिताके घरमें रहना अबतो उचित भी नहीं।। 3

(२) नारी सुलभ भावना :-

चंद्रकला रजनीकांतसे प्रथम दर्शनी प्रेम कर बैठती है। जो स्त्री एकबार किसी पुरुषसे प्रेम करती है। कायम करती है। रजनीकांत अंतीम सांसोंको गिन रहा है। उस वक्त चंद्रकला रजनी कांतकी तावतक पास पहुँचा है। उस समयपर भी उसके मुखपर हँसी होती है। चंद्रकलाने किया हुआ वह अंतीम दर्शन और सुस्वरत रजनीकांतसे व्यक्त किया एक स्मित रेखांका प्रेम जो चंद्र कला जैसे नारीको आजीवन

जिंदा रहनेकी प्रेरणा देता है।

"आह! अपनी मुस्कुराहट!" 1

(3) नारी व्यथाकी समझ

सदियोंसे स्त्रीयोंने पुरुषोंकी गुलामी की है। स्त्रीकी निस्सहायताका फायदा पुरुषोंने सदैव लिया है। रोटी - कपड़े की बेचारी ही जीवनमें महत्वपूर्ण है। पुरुषोंके देशमें ही स्त्रीका संसार शामिल मान लिया है। स्त्रीकी कमजोरीका मुख तो दैहिक है। आत्मसमर्पणकी भावना यह नारीमें होती ही है। औरोंकी रक्षा करते करते वह दूसरोंकी रक्षामें का पूर्ण अपनी विशेष देती है। दीपालीके घरमें वह अपने आपको बाँट लेती है। उसका स्वतंत्रता खो बैठती है। इतनी परवशता नारीको सहन करना पड़ती है। संसारके अनुकूल वातावरणका लाभ भी नारी ले नहीं सकता। यह नारी मनकी व्यथा है।

"हमारा - - स्त्रियोंका निर्माण भी उन्ही उपकरणोंसे हुआ है। जिनसे पुरुषोंका हुआ है। लेकिन तब भी हम पुरुषोंकी गुलामीमें सदैवसे रही आ रही है। हमारे भीतर कभी संदेह नहीं पैदा हुआ ऐसा क्यों है? पुरुषकी नार हाथ की कैंचीसे हमारा संसार सीमित है। पुरुष ने स्त्रीकी कमजोरीको उसका गुण बना दिया और वह उसी प्रशंसामें सदैव के लिये आत्मसमर्पणकर बैठी। दूसरोंकी रक्षामें हम अपनी रक्षा नहीं कर सकी। छोड़ था। शरीर और मनकी इसी कमजोरी के कारण हम संसारके अनुकूल वातावरणको छोड़कर दीपालीके घेरेमें - - डाल दी गई"। 1

(4) पश्चाताप भावना :-

चंद्रकलाने रजनीकांतके प्रेममें मनोज शंकरको कभी समझनेकी कोशिश नहीं की। मनोरमाने मनोज शंकरको महान बननेकी सलाह दी है। तथा चंद्रकलाकोभी अपने आपको सुधारनेकी उपदेश दिया है। काफी देरके बाद तथा अनुभवके बाद चंद्रकला जान पाती है कि उसने गलत कार्य किया। जो उसे करना नहीं चाहिये था। उसने मनोज शंकरको प्राप्त किया। उसका मन नहीं पछताया।

1) सि.कि.होली पृ.८७ चंद्रकला

मानव कुछ कामतो करे जाता है पर बादमें परिणाम मालूम होनेके बाद पश्चाताप करता है। चंद्रकलाने मनोजशंकरकी क्षमा माँगी है कि अब मुझे पश्चाताप हो रहा है। मनोजशंकरको न समझी था।

" तुम मुझे क्षमा नहीं करोगे ?

मैं तुम्हे पहचान न सकी। "

चंद्रकलाने रजनीकांतके लिये अत्यंत प्रतीक्षा की। उसे रजनीकांत ही चाहिये था। भारतीय स्त्रीकी यह महानता और पतिव्रताका विचार सिर्फ उसके रजनीकांतके लिये ही किया था। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यताका परिणाम उसपर हुआ है।

" तब तो मैं पार्वतीकी तरह मृत्युंजय के लिये तपस्या कर रही थी।

मानसिक द्वंद्व :-

चंद्रकलाका मनोजशंकरसे सिर्फ समझौता होता रहा। उसका मन तो रजनीकांतके रूपमें अटक गया था। मनोजशंकरसे उसका प्रेम भी नहीं था। बल्कि मनोज शंकरसे बगैर परिचयकेभी प्रेम हो बैठा था। यह विचित्रता होनेके बावजूदभी मनोरमाका विश्वास इस बातपर नहीं है। पर चंद्रकलातो मानसिक द्वंद्वावस्थामें है। उसके मनका यह भाव, यह संयतोवह तीसरा कौन सुनेगा? वह यह राज किससे कहेगी? क्या वह मनोजशंकरकी पत्नी है? या रजनीकांतकी रख पत्नी?

चंद्रकला अपने आपको मानसिक असंतुलनावस्थामें डाल देती हर वह अब विचित्र अवस्थामें है कि वह क्या करे। उसका दोनों ओरका सर्वस्व नष्ट हो गया।

स्त्री का आधार पुरुष है। पति है अगर पति चला जाता है तो स्त्री मजबूर है। बेबस है, लाचार है। अपने आपको मानसिक संतुलन भावनाका शिकार बना बैठती है।

" कोई सुनेगा कैसे ? मैं किससे कहूंगी ? तुमने कुछ लिया ? इसलिये

२) वि.की.होती पृ.८३ चंद्रकला

कि मेरा सर्वस्व खो जानेपर अब वह अंतिम आधार भी जाने लगा। वह इसलिये —— इसलिये —— १

८) हठीला स्वभाव :-

मनोरमाका कहना है कि चंद्रकलाको अपने मन इतना त्याग करना चाहिये कि वह उसके प्यारा बनाया चित्र रजनीकांतकी पत्नीकी ओर पहुंचा दे पर चंद्रकला स्वयं तथा हठीली है। वह रजनीकांतका सब प्रेम अपने लिये रखना चाहती है। मनोरमासे तो वह चाहती है कि, वह चित्र तो उसने अपने कमरेके लिये बनाया है। उस चित्रमें उसकी सारी आशायें तथा प्रेम भरा पड़ा है। अब वह वह चित्र नहीं लौटायेगी। चंद्रकला रजनीकांतके प्रेममें अटक गयी है। प्रेम भावनाके साथ साथ द्वेष तथा हठीला स्वभाव भी ऐसे मानव में आता है। जो अहं तथा स्वार्थी प्रवृत्तीका होता है।

" लेकिन मैं तो उसे अपने कमरेमें रखना चाहती थी। उस चित्रकी स्मृतीमें " उफ्फ वह हँसना ! उसकी रतनार आँखें - - - -अंधी ,अंधी - वह उभरा हुआ मस्तक और उसपर काले बालोंकी दो चार लटें, पलभरमें मुझको अपना कमरेमें चारों ओर दौड गयी। उफ्फ हँसना तो एक साथ मुझीके अंदर झूलका बरस पड़ना था। "

७) समझौतेकी वृत्ती :-

चंद्रकलाने रजनीकांतके चित्रको तथा रजनीकांतको देखनेके पहले मनोजकुमारसे जीवनकी डोरी को जोड रखा है। मनोरमाने चंद्रकलाको प्रेमी व्यक्ती का नाम पूछनेके बाद मनोजकुमारसे विवाह करना चाहे जीवनके साथ समझौता करना है। न कि उससे प्रेम करना। और अबतो रजनीकांत भी जीवनमें नहीं रहा। वह मैना भी चल बसी। पर आगे चंद्रकलाने यह भी स्पष्ट कर दिया कि जीवनमें समझौतेकी आवश्यकता भी होती है। इसलिये मनोजकुमारसे विवाह किया है। जो वास्तविक नहीं है।

१) चि.की.होली पृ.३८ चंद्रकला

" लेकिन कुछ समय तो किसी प्रकार जीवनके साथ समझौता करता था। फिर मुझे सबकी कसौटी पे रख दी। आज मैं भी विधवा हो गयी। "

क्या एक विवाहीत स्त्री किसी अपरिचित, अनजाने पुरुषके प्रेममें इतनी जल्दी पड सकती है? जो अपने आपको उसकी पत्नीभी मानने लगें। चंद्रकलाके व्यक्तीमत्वपर पश्चिमी सभ्यताका प्रभाव भारी है।

भावनाओंका मुक्तिकरण :-
====================

१) नायिका :-
==========

चंद्रकला अपने जीवनकी तनहाई दूर करना चाहती है। तथा जीवनमें अपने अकेलेपन को नायक हमेशा दूर करनेका प्रयत्न करता है। अपने मनमें दबी, छिपी भावनाएँ वह कहीं ना कहीं कलाद्वारा, चित्रोंद्वारा व्यक्त करता रहता है। नायिकाभी तथा चंद्रकला दोनोंभी वार्तालाप करते समय चंद्रकला का मन नहीं लगता। वह मन लगानेका प्रयत्न करती है और परमेश्वरकी भक्ती भी करती है। यह उसकी भावनाओंका मिला हुआ एक नया मोड है।

" उसकी होने का बनेगा ,
मालिक सिताराम हो। " - - - - १ २

२) तनहाई :-
===========

चंद्रकलाके मनमें प्रेमभावनाका पौधा बढ रहा है। उसके मनमें [illegible] के प्रति प्रेमभावना जग रही है। और वह ठाकुर साब [illegible] के साथ ऐसे उसका जीवन हुआ बन गया। फिरसे अकेला बन पडा। बारबार उसे उसकी यादें याद आती है। उसका मन नहीं लगता। वह अपने आपका मन भी ठीक प्रकारसे बहला नहीं पाती। उसके जीवनका अकेलापन उसे खा जाता है।

" मेरे मनमें आया था की बाबुजीसे कह दूँ कि, वह बेचारा कुछ नहीं, बिल्कुल कुछ नहींन सब कह रहा है। उसका देखकर उसे बातें करता

१) सं. की.होती पृष्ठ ३९ चंद्रकला
२) सिं. की.होती पृष्ठ ३३ चंद्रकला

छूटकर चला गया तो जैसे वह अधूरा हुआ हो गया। यदि मैं पुरुष होती तो ?

चंद्रकलाने उत्तर दिया कि, अब रघुवीरबाबूके प्रेम भावनाके उतरती के साथ उसकी तबियत बदल जायेगी। उसका मन लग जाएगा। प्रेम उसने २-४ बारोंसे नहीं किया था। बल्कि सिर्फ एक से ही। वह भी रघुवीरबाबूसे। अब वह नहीं रहा तो वह तनहाईमें ही जीवन बितायेगी। अब ना कोई दूसरा आयेगा, जिसके साथ [illegible] तथा मनोविनोद किये जाएँ। अब तो सारा विरागके भरा रहेगा। ---- 1

" तुम तो पागल हो, मैं जिससे प्रेम करती हूँ। प्रेम दो बार से तो नहीं हो सकता। और फिर अब उम्र ढलनेमें प्रेमका समय भी नहीं रहा। वह तो कुछ दूसरा था। जब युवकका रस सीमित रहता था। और अकस्मात किसी ओर वह झुकता था। और उसके साथ प्रेमकी नहीं - विनोदकी बातें हो सकती थी। उसके साथ खिलवाड हो सकता था। तबियत बहलायी जा सकती थी
---- 2.

10) विरागावस्था :-

चंद्रकलाके जीवनमें प्रेमकी एक किरण आकर चली गयी। जिससे जीवनमें कई रंग बिखरे। उन दिनों उसके जीवनमें प्राण फूँक दिये। पर अब वह सब खुशियाँ नहीं है। क्योंकि मदनको उसने छोड दिया। प्रेमकी कली खिली ही थी कि वह मुरझा गयी। अब मनोरमाकी वह जिम्मेदारी ले चुकी है। वह जीवनमें दुख ले बैठी। अब वह फिरसे अकेले जीवनको आलिंगन दे रही है। संसारमें अब उसके जीने लायक शायद कुछ नहीं रहा। मानवको जब प्रेम मिलता है, तो शायद सुखोंकी बौछार होती है। पर दुःखकी छोंक या कटु अनुभव जीवनमें दुःख देते है।

" लेकिन अब तो व्यर्थ है। अब तो शायद वह संसारमें नहीं रहा। --- 3

1) इ.चं.जोशी पृ. 34 चंद्रकला
2) इ.चं.जोशी पृ.39 चंद्रकला
3) इ.चं.जोशी पृ.34 चंद्रकला

चंद्रकला रजनीकांतके चित्रको देखकर ही पुरुषकी प्रेममें पड गयी है। मनोरमा के जो चित्र दिखाता है, वह उचित मालूम पडता है। जिस चित्रमें चंद्रकलाने कई सपने रचायें, कई विचार किये, और वह अब रजनीकांत दुनियासे हमेशा हमेशाके लिये चला गया। चंद्रकला फिरसे अकेली हुई। उसका प्रेमी उसे छोडकर तडपाते रहनेके लिये, हमेशा हमेशाके लिये तरसाते रहनेको छोड गया जो, "यौवन द्वारपर " था अब मृत्यु द्वारपर खडा था। इतनी जल्दी। चंद्रकलाका यह पहला प्रेम था, जो उसे जीवनमें दर्द दुःख दे गया।

" हाँ, चित्र इतना उचित मालूम हो रहा है, देख जैसे अभी बैठ रहा है। एक चित्रके लिये - - - -यही मरने लिये यहाँ आये क्यों ? अब इसतरह चला जाता था। चित्रका नाम क्या रखा था तुमने ? " यौवन के द्वारपर " लेकिन इसका नाम रखना चाहिए था " मृत्युके द्वारपर "। - - - - ?

११) प्रेम भावना :-

चंद्रकलाने रजनीकांतसे मन-ही-मन से प्रेम किया है और मनोरमाने उसके प्रेम भावनाको पता किया है। मनोरमा वह चित्र रजनीकांतकी पत्नीको लौटानेके लिये कहती है तब चंद्रकला देखते यह पूछती है कि, चित्र उसने बनवाया है। वह चित्र कदापि पत्नीके तरफ नहीं जा सकता। वह स्वार्थी है। त्याग नहीं चाहती। मनोरमाको दूसरा चित्र बनानेके लिये वह कहती है। चंद्रकला अपने प्रेममें किसी औरको शामिल नहीं करना चाहती।

" तुम कह रही हो। चित्र बनवाया मैंने और मैं हूँ। उसके पास ?
दूसरा बना लो " — ?

चंद्रकला चाहती है कि रजनीकांत के प्रेममें कोई और हिस्सेदार न हो। इतना कि उसकी पत्नीभी उसका कब्जा करता है। कि रजनीकांतके पत्नीके लिये वह चित्र अधिक उपयुक्त नहीं है। उसका उपयोगभी उसके लिये नहीं है।

१) चिं.वी.जोशी पृष्ठ ३८ चंद्रकला

वह चाहती है कि चंद्रकला का प्रेम सिर्फ रजनीकांत केही रहीं।

" तुम तो हठ कर रही हो? इसका उपयोग वह किस अर्थमें करेगी। २

(१२) स्वावलंबी वृत्ती :-

मनोरमा कहती है कि, आज चंद्रकला दुःखावसे तप्त है। पर चंद्रकलाका कहना है कि वह अब विधवाभी अगर हो चुकी है तो भी वह अब किसी परपुरुष-पर अवलंबित नहीं रहेगी। न उसकी सहायता लेगी। रोटी, वस्त्र के पीछे रखी नहीं रहकर वह अब अपूरे निर्णयका प्रति स्वराज्य करेगी। यद्यपि वह विधवा है पर फिरभी वह जिंदा रहेगी। अपने पैरोंपर खडी होगी। स्त्रीको आखिर स्वाव-लंबी होना आवश्यकहि होता है। चंद्रकलाका चारीत्र्य आज जग गया है।

"मेरे भीतर आज चिरंतन चारीत्र्य का उदय हुआ है। मेरी वेदना आज मेरे चारों ओर फैल रही है और तुम कहती हो मुझे दुःखाप हो रहा है। मैं आज अपने पैरोंपर खडी हो रही हूं। मुझे किसी दूसरे पुरुषकी सहायता की जरुरत नहीं है। रोटी और वस्त्र मेरी चिंता इतनी हो चुकी है कि मैं अपना प्रबंध कर लूंगी। कोई चिंता नहीं है। मेरावे वैधव्य अमर रहे।— १

मुरारीलालका कहना है कि, अब रजनीकांतकी मृत्यु हो गई है, और पतीका तथा पिताकाभी आश्रय नहीं रहा अब वह मुरारीलालकेही घर रहे। चंद्रकलाका कहना तो स्वावलंबी वृत्तीपर है। वह किसीके उपकारोंमें अटकना नहीं चाहती। उसका अभिमान है कि, वह स्वयंसिद्ध रहे।

" अपने ऊपर कर मुझे शिक्षा इतनी दे दी है कि मैं अपना निर्वाह कर लूँ " २

१) चि.चिरयोगी पृ.८८ चंद्रकला
२) चि.भी.जोशी पृ.९९ चंद्रकला

(१३) पश्चिमी विचारधाराके प्रभावित :-

चंद्रकला आधुनिक कल्पनाको प्रेम व्यक्त करती है। उसकी पढाई पाश्चात्य देशोंमें होनेके कारण बाहरी वर्तन कुछ अजीबसे प्रकारका है। वह अपने पिताके साथभी अभारतीय वर्तन करती है। जीवनमें वह कोई झंझट लेना नहीं चाहती। ताकि जीवनमें कोई और दुःख उसके पिता उसके प्रति चिंतित है। चंद्रकला को उसका कुछ महसूस नहीं होता।

वह कहती है कि मुझे क्षमा करें।

" अच्छा तो आप मुझे क्षमा करें। " १

चंद्रकलाने आजकलकी शिक्षा पाई है। जो हर प्रकारसे आधुनिक पद्धतीकी ओरसे उसे ले जाकर उसका बर्ताव अमेरिकन जैसे करती है।

(१४) पश्चातापी :-

मनोवैज्ञानिक पूछते है कि, क्या रजनीकांत जो मनसर था उसके जीवनकी समस्या है तब मनोरमाका विचार है कि अब जो शृंगार किया था वह पहले क्यों नहीं किया। चंद्रकला चिंतित होती है और कहती है कि पार्वतीकी तरह ही मैं मृत्युंजयके लिये तपस्या कर रही थी। अर्थात रजनीकांतके लिये मरकर विजय पाना चाहती थी। मनोरमाका कहना है कि क्या चित्र ठीक है? चंद्रकला का मन उद्विग्न हो उठा है। अब उसके मनमें कोई विचार न उठेगा कोई लहर न उठेगी। अर्थात अब प्रेम करनेकी कोई इच्छा नहीं। अब तो वह मनकी सागर खामोश रहेगा। प्रशांत

" प्रशांत महासागर की तरह। अब लहरे न उठेंगी। " — १

(१५) मरणप्राय-सी :-

चंद्रकलाके जीवनका संपूर्ण अर्थ समाप्त हो गया है। रजनीकांतभी उसे छोडकर चला गया। अब वह किसके लिये जिंदा रहे? जबतक जीनेके साथ कुछ

वि.की.दोशी पृ.८३ चंद्रकला

जीवनमें है। तबतकही मानव जीना चाहता है। जीवनमें घोर निराशा एवं असफलता अधिक आया तो वह मरनाही चाहता है। चंद्रकला नारी है। नारीमें पुरुषका मुकाबले अधिकप्रमाणमें मरण प्रवृत्ती ज्यादा होती है।

" ओह! इस समय आप चुप रहे! अब किसीकी बात आपकी क्यों सहेगी?
जिसे मरना था वह तो मरगया ही।" 1

चंद्रकला अब जीवनमें अधिक भी दुःखी रहनेके लिये तरस गयी है तथा तैयार नहीं है। इसी कारण वह भी रचनाकारके पीछे रहकर जीना नहीं चाहती

अब वह न पूछो। जिन्हें ऐसी आये जो कभी टूटे न।। 2

चंद्रकलाकीभी मरणप्रवृत्ती जागी वह गई है। हो सकता है शायद वह जीवनमें असफली हुवी है। आत्म हत्या करने के लिये।

1) व 2) खिड़की.चौकी पृ.81 चंद्रकला